 ISBN: 978-81-947902-7-3

वर्तमान में नारी विमर्श
साहित्य जगत और नारी की भूमिका

आर. के. राय

अवकाश प्राप्त प्राचार्य

एस. एम. सी. एल. के. पी. जी. गर्ल्स कालेज,

सिकन्दराबाद, बुलन्दशहर, उत्तर प्रदेश, भारत

भारतीय समाज में नारी का सदा सम्मान होता आया हैं। वह पुज्य रही हैं। आधुनिक समय में नारी जीवन के प्रत्येक क्षे़त्र में पुरूष के साथ कंधे से कधा मिलाकर चल रही हैं शिक्षा, साहित्य, धर्म–दर्शन के क्षेत्र में भी उच्च से उच्च उपाधियॉ प्राप्त कर वे उच्च पदो पर –कार्यरत हैं। तकनीकी क्षेत्रों में प्रशिक्षण ग्रहण कर के वायुयान चला रही हैं। मशीनों की देखभाल कर रही हैं, और इलेक्ट्रानिक के क्षेत्र में ज्ञान प्राप्त कर इस क्षेत्र में भी सक्रिय हैं।

नारी का भारतीय समाज में सदैव विशेष स्थान रहा हैं। विदेशी आक्रमणकारियों के कारण कुछ समय तक नारी की स्थिति में अवश्य परिवर्तन आया था। इस के अनेक कारण थें। इस से पुर्व वैदिक काल से ही भारतीय नारी पुरूष के समान जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में बढ चढकर भाग लेती थी। वैदिक और उपनिषदकाल में नारी का परिवार और समाजिक जीवन के प्रत्येक कलात्मक क्षेत्र में आदर था इस विषय पर इन ग्रथों में इस प्रकार लिखा हैं–

यत्रनार्यस्तु पुज्यन्ते रमयन्ते तत्र देवताः।

यत्रैतास्तु न पुज्यन्ते सर्वास्त्राफलाः क्रियाः।।

अर्थात् जिस कुल, देश, समाज और, राष्ट्र में नारियों को सम्मान मिलता हैं, वहॉ दैवी शक्तियॉ निवास करती हैं, जहॉ ऐसा नहीं होता, वहॉ समस्त कार्य निष्फल होते हैं। पुरा काल में नारी न केवल सम्मान ही पाती थी, अपितु माता के रूप में उसे पिता से भी सौगुना श्रेष्ठ माना जाता था। यथाः–

जनको जन्मदातृत्वात पालनाच्च पिता स्मृतः।

गरीयान् जन्मदातुश्च योदन्न योदन्नदाता पिता भुमे।।

तयोः शतगुणे माता पुज्या भम्या च वन्दिता ।

गर्भधारणपोषाभ्यां सा च ताम्यां गरीयसी।।

पिता जन्मदाता और पालनकर्ता होने के कारण सब पुज्यो में पुज्यतम कहलातें हैं। अन्नदाता पिता जगदाता से भी श्रेष्ठ हैं। इनसे सौगुना श्रेष्ठ और वदना योग्य माता हैं। क्योकि वह गर्भधारण करती हैं और पालन–पोषण करती हैं तथा शिशु को सम्मार्ग की ओर कुशल शिक्षिका की भाति प्रेरित होने हेतु मार्गदर्शन करती हैं। वेद और उपनिषदकान काल की नारियॉ अत्यत विदुशी थी उन्हे ऋषि की संज्ञा भी दी जाती थी बाल्यकाल से उनकी एवं कलाओं के ज्ञान हेतु व्यवस्था भी की जाती थी।

पुरा कल्ये कुमारीणां मौजीबन्धन मिष्यते।

अण्यायनं च वेदानां सावित्री वचनं तथा।।

पूर्व काल में कुमारियों का उपनयन, वेदारभं, गायत्री उपदेश होता था। यही कारण था कि वैदिक काल में विश्वबाला, अपाला, घोषा, गार्गी, केकैयी जैसी विदुसी नारियों का उल्लेख–मिलता हैं। ये सभी नारियाँ वैदिक मंत्रों एवं साहित्य के निर्माण में अपना महत्वपुर्ण स्थान रखती हैं।

वेदों की घटनाऍ लिखने वाली नारियों में ब्रहमवाहिनी, विश्वबाला, अपाला, वाक्र, सुर्या, रोमेघा, शाश्वती, ममता, ... घोषा आदि का योगदान प्रशंसनीय रहा हैं।

प्राचीन भारतीय साहित्य में ऐसी महान नारियों के जीवन की घटनाएं भी आज भी प्रेरणा देती हैं। शाण्डिली, मदालसा, उर्मिला, शकुन्तला, मंदोदरी, गांधारी आदि नारियो का तप–त्याग अनुकरणीय हैं।

गाथासप्तशती

(प्रथम शती ई0) में सात कवित्रियों के पद संग्रहित हैं। इससे स्पष्ट हैं कि बौद्ध–जैन कालों में भी स्त्रियों को पर्याप्त शिक्षा दी जाती थी और अपने ज्ञान के आधार पर विभिन्न साहित्यिक एवं शास्त्रीय संगोष्ठियों मे भी भाग लेती थी।

वात्स्यायन के ''कामसूत्र'' से भी यह ज्ञात होता हैं कि धनी परिवारो की कन्याओं को गुप्तकाल में साहित्य, सगीत, चित्रकला, माला बनाने, खिलौने बनाने, घर की सजावट आदि करने की शिक्षा दी जाती थी। 600 ई0 से 1200 ई0 तक के इस काल के ऐतिहासिक विवरण से ज्ञात होता हैं– कि कुछ स्त्रियॉ अपनी मनोहर काव्य शैली के लिये प्रसिद्ध थी। जैसे शीलहारिका और गुजरात की देवी नाम की कवयित्री। राजशेखर ने विजयंका की तुलना सरस्वती से की हैं। राजशेखर की पत्नी भी अपनी कविता और उच्चकोटि की साहित्य समालोचना के लिये प्रसिद्ध हैं।

इस प्रकार प्राचीन भारतीय इतिहास के पन्नो से लेकर मध्यकालीन एवं आधुनिककालीन पन्नो के अध्ययन से यह ज्ञात होता हैं कि सामाजिक परिस्थितियों के अनुसार नारियो की स्थिति भी बदलती रही हैं। कभी उच्च स्थान मिला कभी निम्न स्तर को प्राप्त करती रही, फिर भी कुछ स्वाभिमानी नारियों ने आजीवन शिक्षा प्राप्त कर, अतुल्य ज्ञान के भण्डार को

प्राप्त कर पुरूष–समाज में अपने को उच्च स्थान पर स्थापित करने का प्रयास किया हैं।

मध्यकालीन अर्थात् मुस्लिम काल और मुगल काल में नारियों की स्थिति कुछ सामान्य तरह की हो जाती हैं। साहित्य, सगीत कला का एक साथ विकास हुआ हैं किन्तु विशेषतः साहित्य के क्षेत्र में नारियो का योगदान नहीं के बराबर ज्ञात होता हैं नूरजहॉ, मेहरून्निसा, जहाँआरा, नादिरा आदि अपनी काव्य प्रतिभा के लिये प्रसिद्ध रही हैं। संगोष्ठियों मे भाग लेने का वर्णन नहीं मिलता –कारण कि मुस्लिम काल और मुगल काल प्रायः ऐतिहासिक उथल–पुथल का काल रहा हैं। फिर भी कुछ नारियों में कौव्वाली, गज़ल, मर्सिया, प्रेमगीत के लिये प्रसिद्ध रही हैं। विशेष तौर पर मध्यकालीन नारी का सम्बन्ध संगीत के वाद्य, गायन और नृत्य की तरफ रहा हैं।

आधुनिक काल में विशेष तौर पर स्वतंत्रता संग्रह से लेकर अबतक साहित्य जगत में नारियों का जो योगदान हुआ हैं उनसे उनके हृदयग्राही भावनाओं, अदम्य उत्साह और साहित्य के अध्ययन से राष्ट्रीय भावनाओ का ज्ञान होता हैं। इस क्षेत्र में हम सुभद्रा कुमारी की 'झांसी की रानी' कविता का अवलोकन करते है तो ऐसा प्रतीत होता हैं कि नारी में भी कितनी हिम्मत और उत्साह भरी भावनाएॅ हैं जिससे माध्यम से चौहान ने नारी शक्ति में जागरण की स्थिति को अभिव्यक्ति देने का सर्वप्रथम प्रयास किया था । यथा–

चमक उठी सन् सत्तावन में। वह तलवार पुरानी थी।
खुब लडी मरदानी वह तो झॉसी वाली रानी थी।।

ये पक्तियाँ 'राष्ट्रीय बसंत की प्रथम कोकिला' के रूप में परिचायक हैं। यह वह कविता हैं जो जन–जागरण का, बच्चे– बच्चे का कंठधर बनीं। महाकवि मिल्टन कविता में जिस सादगी, जोश और

असलियत की बात करते हैं, वे पूरी तरह इस अमर कविता में अनुस्यूत हैं। इस वीरांगना कवयित्री का जन्म इलाहाबाद में सन् 1904 में हुआ था और मात्र 43–44 वर्ष की आयु में एक कार दुर्घटना में निधन हो गया। जिस प्रकार भक्ति काल में 'मीराबाई' ने अपनी भक्तिपरक शैली में हिन्दी–साहित्य् जगत को अमूल्य देन दी हैं। उसी प्रकार, सुभद्रा कुमारी चौहान ने अपनी ओजपूर्ण शैली में नारी–जगत को झकझोर दिया – इसलिए कि–

'उतिष्ठ जाग्रत प्राप्यः वरान्नि बोधत्'

उठो, अपने लक्ष्य की प्राप्ति के लिये 'रानी झांसी' की तरह भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में तलवार लेकर काली और दुर्गा बन कर कूद पड़ो।

राष्ट्रीय स्वतंत्रता संग्राम सक्रिय भूमिका निभाते हुए, उस आनन्द और जोश में सुभद्रा जी ने जो कविताएँ लिखी, वे उस आन्दोलन में एक नई प्रेरणा भर देता हैं। यथा–स्त्रियों को प्रबोधन देती यह कविता देखिये–

''सबरन पुरूष यदि भीरू बनें
तो हमको दे वरदान सखी ।
अबला में उठ पडे देश में–
करे युद्ध घमासान सखी।
पन्द्रह कोटि असहयोगिनियॉ
दहला दे ब्रहमाण्ड सखी।'

असहयोग आन्दोलन के लिए यह आह्वान इस शैली में तब हुआ जब स्त्री सशक्तीकरण का ऐसा रैला नहीं था। 'वीरों का कैसा हे वंसत' उनकी यह भी प्रसिद्ध देश प्रेम की कविता हैं जिसकी रचना, लय और भाव गर्मिता अनोखी थी। स्वदेश प्रेम के प्रति– 'विजयादशमी' 'विदाई',

'सेनानी' का स्वागत', 'झांसी की रानी की समाधि पर' 'जलियाबाग बसंत' आदि श्रेष्ठ कविताएॅ उनके हैं।

राष्ट्रभाषा के प्रति भी उनका गहरा सरोकार हैं जिसकी सजग अभिव्यक्ति 'मातृ–मंदिर' में नामक कविता में हुई हैं यह उनकी राष्ट्रभाषा के उत्कर्ष की चिंता हैं–

''उस हिन्दु जग की गरविनी, हिन्दी प्यारी हिन्दी का
प्यारे भारत कृष्ण की, उस प्यारी कालिन्दी का ।
है उसका ही समारोह यह, उसका ही उत्सव प्यारा'
मैं आश्चर्यभरी आखों से, देख रही हूॅ यह सारा
जिस प्रकार बंगाल कालिका, अपनी माँ धनहीना को।
टुकडों की मुहताज आज तक, दुखिनी की उस दीना को।

इसी प्रकार 'मधुर बचपन की यादे' नामक कविता प्रसिद्ध रही हैं। इस प्रकार सुभद्रा कुमारी चौहान ने अपने छोटे से जीवन में बडी लेखनी चटकाती रही।

अमृता प्रीतम भारतीय साहित्य का एक ऐसा नाम है, जिसकी लेखनी में विद्रोह और समर्पण एकाकार दिखते हैं। वे औरत की स्मिता और आजादी की पक्षधर हैं वे इंसानियत की तरफदारी में नफरत के खिलाफ मोहन की खुली तरफदार । उनका लिखा, 'उन्ही के शब्दों में 'इसान के भीतर सो गये देवता को जगाने की कोशिश है। 'रसीदी टिकट' और 'कोरे कागज' भी उनमें महत्वपूर्ण साहित्यिक कृतियॉ हैं जिनसे साहित्य जगत में इन्हें ख्याति प्राप्त हुई और अमर हैं।

महादेवी वर्मा

छायावादी स्तंभों में एक रही जिन्होने–'नीरभरी दुख बदली', 'रात सी नीरव व्यथा, तय–सी अन्तः मेरी कहानी' 'जाग बेसुध जमा' तुझको दूर जाना आदि के साथ 'निहार', 'रश्मि' 'दीप–शिखा' कविताओं के साथ

'नीलम के दीप नही, जिनको भी है बुझ जाना' आदि पक्तियों से युक्त कवितायँ लिख कर साहित्य जगत को धन्य बना दिया। उनकी 'श्रृंखला की कडियाँ' नारी–जीवन की एक ऐसी गाथा है जो दिल को दहला देने वाली साहित्यिक कृति हैं। उन्होंने लिखा 'नारी को पुरूष ने ऐसे पाल रखा हैं जिस तरह पिंजरे में तोता पाला जाता हैं।' इस तरह महादेवी हिन्दी साहित्य की अमूल्य निधि के रूप में विख्यात रही हैं।

कृष्णा सोबती

'स्वाभिमान के शुद्ध साहस की स्याही' – मैं उस सदी की पैदावार हूॅ जिसने बहुत कुछ दिया और बहुत कुछ छीन लिया। यानी 'एक की आजादी और एक का विभाजन'। मेरा मानना हैं कि लेखक सिर्फ अपनी लडाई नहीं लडता और ना ही सिर्फ अपने दुःखः–दर्द और खुशी का लेखा–जोखा पेश करता हैं। लेखक को उगना होता हैं, भिडना होता हैं, हर मौसम और हर दौर से, नजदीक और दूर रिश्तों के साथ, रिश्तों के गुणा और भाग के साथ । इतिहास के फैसलो और फासलों के साथ। मेरे आस–पास की आबोहवा ने मेरे रचना संसार और उसकी भाषा को तय किया जो मैने देखा जो मैने जिया, वही मैनें लिखा।'

'बताओ श्री मैं क्या करूँ उन इच्छाओं का जो मेरी देह में उठती हैं। तुम्हारी देह में उठने वाली इच्छायें और वही इच्छायें मेरे लिये पाप।' कृष्णा सोबती के बहुचर्चित उपन्यास –मित्रो मर जानी सें'।

इस प्रकार कृष्णा सोबती हिन्दी की वह पहली कहानीकार थी जिन्होंने सभी के सभी के व्यक्तित्व की लड़ाई लड़ी। कहने को हिन्दी मे जैनेन्द्र, अज्ञेय और इलाचन्द्र जोशी जैसे कथाकार मन की गहराइयों के अन्वेषण के लिये विख्यात हुये। तब भी मित्रों का स्त्री स्वर सुनने के लिए हिन्दी पाठको को कृष्णा सोबती की प्रतिक्षा थी।

स्त्री मन की अभिव्यक्ति को क्रांतिकारी स्वर देने वाली कृष्णा –सोबती की कलम अब खामोश हैं लेकिन कुंठाओं को ध्वस्त करने वाली स्वाभिमानी रचनाकार के रूप में वे साहित्य जगत की स्मृति में शाश्वत रहेगी।

चित्रा मुद्‌गल

'बेबाक कलम का सम्मान'– अपनी बेबाक बातचीत और लेखन शैली के लिए जानी जाती हैं–चित्रा मुद्‌गल। इसवर्ष इन्हें 'साहित्य अकादमी सम्मान' मिला हैं। साहित्य अकादमी सम्मान 'पो.बाक्स. 203 नाला सोपारा' उपन्यास के लिए इस वर्ष चित्रा मुद्‌गल को मिला हैं।

रचनाकर्म को सामाजिक विमर्श के नाम से संबोधित करने वाली चित्रा ने कहानी, उपन्यास, लेख, रिपोर्ताज, बाल उपन्यास, नाट्‌यरूपान्तण, संपादन आदि क्षेत्रों में अपना लोहा मनवाया हैं।

इस प्रकार, वर्तमान साहित्य जगत में ममता कालिया, पुष्पा मैत्रेयी, मन्नु भण्डारी, भावना शेखर, ऋतु सारस्वत आदि के साथ ही शुभा श्रीवास्तव, अनिता शेरगिल, डा0 श्यामलाल राय, स्मिता श्रीवास्तव, आरती. आर. जेरक, प्रत्युष प्रसन्ना, नीरजा माधव आदि नारियों ने अपनी साहित्य–साधना की लेखनी से अपने को अमर बना दिया हैं मुस्लिम स्त्रियों मे भी रज्ज़ब, सहजोबाई, रविया आदि ने भी साहित्य जगत में अमरक्रांति प्राप्त की हैं।

वर्तमान समय को साहित्य–जगत में 'नारी जागरण काल' से यदि अभिहित किया जाय तो अत्युक्ति नहीं हो, आज की नारी जीवन के हर क्षेत्र में घर की चहारदिन को लांघकर अपना कर्त्तव्य निर्वाह करने में अग्रसर हैं। तभी तो हिन्दी–साहित्य के छायावादी प्रमुख कवि स्व0 जयशंकर प्रसाद जी ने कहा था–

"नारी तुम केवल श्रद्धा हो–
विश्वास रजत सा पग तल में।

पीयुष स्त्रोत सी बहा करो–

जीवन के सुन्दर समतल में ।"

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. वैदिक साहित्य

2. उपनिषदिक साहित्य

3. प्राचीन भारत सामाजिक एवं आर्थिक इतिहास

4. आधुनिक भारतीय सांस्कृतिक का इतिहास

5. हिन्दी साहित्य का इतिहास–आचार्य प0 राम चन्द्र शुक्ल

6. हिन्दी साहित्य का इतिहास– डा0 नागेन्द्र

7. हिन्दी साहित्य का इतिहास – डॉ0 ईश्वर दत्त

8. हिन्दी कथा साहित्य– भारत भूषण अग्रवाल

9. भक्ति कालीन नारी मीराबाई– डा0 उषा मल्होत्रा

10. हिन्दी भाषा और साहित्य–डा0 युगेंन्द्र

11. पत्र–पत्रिकाएँ– दैनिक जागरण नई दिल्ली–2018

12. दैनिक हिन्दुस्तान नई दिल्ली–2018

13. दैनिक जागरण वाराणसी–2019

14. दैनिक जागरण जुलाई नई दिल्ली–2018

पत्रिका– अहा जिन्दगी